सम्पादक के नाम

सत्य व्यापक है ,सत्य किसी एक परिधि में ही नहीं समा सकता !

गजनवी भारत से धनदौलत के साथ ग्रन्थों को भी ले गया !
इतने ग्रन्थ थे कि उसने गजनी में एक बडा पुस्तकालय बना दिया ।
उसने बडे गर्व से यह सोचा कि खलीफा को बुला कर दिखाऊं ,
वह बहुत खुश होगा !
खलीफा को बुलाया , खलीफा ने पूरा पुस्तकालय देखा लेकिन कुछ भी नहीं बोला ।
जब चलने लगा तो गजनवी ने ही पूछा कि > खलीफा ! बताया नहीं कि पुस्तकालय आपको कैसा लगा?
खलीफा बोला कि मैं तो खुद ही आपसे पूछने वाला था !
ये पुस्तकें कुरान के खिलाफ हैं या कुरान के मुआफिक हैं??
गजनवी ने कहा कि कुछ कुरान के खिलाफ भी हो सकती हैं और कुछ मुआफिक भी हो सकती हैं ।
खलीफा ने कहा कि जो कुरान के खिलाफ हैं, उन्हें जला देना चाहिये ।
जो मुआफिक हैं , उन्हें चाहो तो रखो वरना वे जगह ही तो घेरती हैं !!
हमारे पास कुरान के रूप में सबसे बडा ज्ञान मौजूद ही है,
हमें अब कौन से ज्ञान की दरकार है??
खलीफा आजभी मौजूद है ।
वे कुछ लोग खलीफा ही तो हैं , जो समझते हैं कि सबसे बडा सत्य सिर्फ और सिर्फ हमारे ही पास है , वे हिन्दू हों ,या मुसलमान, या अन्य किसी भी दल या संगठन के प्रवक्ता हों !
सत्य व्यापक है । वह किसी एक परिधि में ही नहीं समा सकता !

- राजीव रंजन चतुर्वेदी

छत्तीसगढ़ में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना किसानों के लिए मुसीबत बन गयी है

किसानों को उम्मीद थी कि फसल खराब होने पर उन्हें इस योजना का लाभ मिलेगा. किसानों को बीमा क्लेम तो मिला लेकिन उनके खातों में आये महज दो से चार रुपये.

इन किसानों ने मोदी की फसल बीमा योजना के तहत अपनी फसलों का बीमा करवाया था. बैंक के जरिये प्रीमियम की रकम हर माह इनके खाते से कटती चली गयी. किसानों ने राजी खुशी प्रीमियम इस उम्मीद में जमा किया कि जरूरत पड़ने पर इन्हें क्लेम की रकम मिल जायेगी. पर सोचा न था कि यहाँ भी छले जायेंगे.

कहा न था कि इस दोगले आदमी पर विश्वास न करना....इसका जन्म केवल दंगे कराने और पूंजीपतियों के तलवे चाटने के लिए हुआ है?

- किरण कुमार

कृपया मानवता के नाते विचार करें

टिहरी गढ़वाल के पौखाल नामक कस्बे में न पहले ऐसा कभी हुआ , और न होगा । नेहा पंवार (बदला नाम) को सब एक शरीफ लड़की के रूप में जानते थे। वह स्थानीय इंटर कॉलेज में 11वीं की छात्रा है । स्कूल जाने से पहले मवेशियों की देखभाल और घर के अन्य कामों में मां का हाथ बंटाती । कभी किसी लड़के के साथ उसका नाम तक न सुना । आज सुबह मंगलवार को वह सुबह 9 बजे स्कूल के नाम पर घर से निकली ।

लेकिन उसी स्कूल में 9वीं क्लास में पढ़ने वाले उसके छोटे भाई ने जब स्कूल में बहन को न पाया , तो उल्टे पाँव घर लौटा । बदनामी की डर से घर वालों ने किसी को बगैर बताए उसकी तलाश शुरू की ।

आश्चर्य तब हुआ , जब पड़ोस गांव का रत्न सिंह भी घर से गायब था । किसी ने उन दोनों को जंगल की तरफ दौड़ते देखा था ।

जब असलियत मालूम पड़ी तो सब दंग रह गए ।

नेहा सीधे अपने गांव के महिला मंगल दल की सदस्यों के साथ बन में आग बुझाने निकल गयी थी । रत्न सिंह भी इसी मकसद से आग बुझाने साथ गया था ।

आप भी ऐसा कीजिये, क्योंकि उत्तराखंड के जंगल धू धू जल रहे हैं । जंगल सरकार की नहीं, अपितु हमारी सम्पति हैं । जल स्रोत सूखेंगे तो सरकार का कुछ नहीं बिगड़ेगा , हमारे गांव प्यासे रहेंगे।

- राजीव बहुगुणा

23 मई, 1987 मलियाना नरसंहार को पूरे 31 साल हो गए, लगभग यही वक्त था, ऐसी ही शदीद गर्मी थी, ...

मैं इस नरसंहार का चश्मदीद हूं। मलियाना में आज का दिन दूसरे दिन की तरह मामूल की तरह शुरू हुआ। कोई हलचल नहीं थी, किसी ने याद भी नहीं किया कि आज के दिन हम पर क्या गुजरी थी। वक्त बड़े से बड़े जख्म को भुला देता है। चार-पांच साल पहले हम चंद लोग हर साल 23 मई को छोटी-मोटी शोक सभा टाइप की कुछ कर लिया करते थे, अब वह भी बंद है। 85 आरोपियों में आधे के लगभग आरोपी गुजर गए। गवाहों में से भी बहुत सारे गवाह चल बसे। मुकदमा चल रहा है। अब तक महज चार-पांच गवाहियां हुई हैं।

जिस हादसे में 73 लोग मारे गए हों, उसका मुकदमा इतनी सुस्त रफ्तार से चले, ये हिंदुस्तान में ही संभव है। यह भी हिंदुस्तान में ही मुमकिन है कि मुकदमा जिस एफआईआर के आधार पर लड़ा जा रहा था, चार साल पहले केस डायरी में उस एफआईआर की मूल प्रति ही गायब हो गई। है ना गजब बात? किसी दिन खबर आएगी कि मलियाना नरसंहार के सभी आरोपी बाइज्जत बरी कर दिए गए हैं। चंद दिन हल्ला गुल्ला मचेगा, फिर कुछ दिन बाद शांति हो जाएगी। यह सवाल, सवाल ही रह जाएगा कि आखिर 73 लोगों का कातिल कौन था? ऐस ही जैसे मालेगांव, मक्का मस्जिद बम ब्लॉस्ट में मारे गए लोगों का कातिल कोई नहीं है।

- सलीम अख्तर सिद्दीक़ी

मोदी तुम संभल जाओ, लगाम दो अपनी बेबाक जुबान को

एक मां को बुरा-भला बोलते हो क्यों भूल गये कि तुम्हारी भी मां है। विदेशों में जाकर कहते हो अतिथि देवो भव और अपने देश में आई हुई पचास साल पुरानी विदेशी महिला की बेइज्जती करते हो। उसने तो त्याग और भारतीयता कि मिसाल दी है।

कौन मां अपने बच्चों के लिये त्याग नहीं करती। सिर्फ़ मन्दिरों में जाकर घंटी बजाना भारतीयता नहीं है वहां की परम्परा बरसों तक निभाते रहना भारतीयता है, उसका मां-मां कहकर अपमान मत कर। यह हर भारतीय माता का अपमान है। लड़नी है तो सीधी लड़ाई लड़ों। इसे अपना मेनीफ़ेस्टो मत बनाओ। क्या यह सब भारतीय प्रधानमंत्री को शोभा देता है कि अपने देश की माताओं का कहीं भी स्टेज पर खड़े हो कर ऐसे अपमान करे।

(कर्नाटक चुनाव प्रचार के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा सोनिया गांधी पर कसी गयी फब्बत्तियों से प्रेरित होकर एक मां द्वारा लिखी गयी पंक्तियां।)

-एक मां

राजस्थान के इस गांव में पत्नी के गर्भवती होते ही पति कर लेता है दूसरी शादी

ऐसे गांवों में कई बार अधिकारी लोग भी बहुबिवाह नहीं रोक पाते। हैरानी की बात यह है कि यहां बहुविवाह पहली या दूसरी पत्नी की मर्जी से ही होते हैं, स्नेहा शॉ की रिपोर्ट...

यह जानकर हैरानी होगी कि राजस्थान के कुछ इलाकों में जब किसी परिवार की एक बहू गर्भवती होती है, तो पति दूसरी शादी कर लेता है। जी हां, ये सुनकर तो आप भी जरूर चौंक गए होंगे कि कोई अपनी पत्नी के गर्भवती होने पर दूसरी शादी के बारे में कैसे सोच सकता है? पर इससे भी चौकाने वाली बात ये है कि उन लड़कियों को भी शादी के पहले दिन से यह पता होता है कि ये दिन जरूर आएगा!

हमारे देश के एक प्रांत में इस तरह के रिवाज हैं, जहां हर शादी-शुदा लड़के का पिता बनने से पहले दूसरी शादी करने की प्रथा प्रचलित है। यह प्रथा है राजस्थान के बाड़मेर जिले में देरासर नामक गांव की। जहां पानी की इतनी किल्लत है कि घर की औरतों को तपती गर्मी या भीषण सर्दी में पूरा-पूरा दिन उसकी खोज में मीलों भटकना पड़ता है। पानी लाने का ये सफर इन औरतों के लिए आसान नहीं होता।

बचपन से ही लड़कियों को यहां पानी ढोकर लाना सिखाया जाता है, ताकि वे कुछ ही सालों में दो-तीन ढ़ो कर चल सकें। चूकि ये गर्भवती औरतों के लिए खतरे का काम है, इस गांव में लड़कियों के गर्भवती होते ही उनके पति दूसरी शादी कर लेते हैं, ताकि पानी लाने की जिम्मेदारी दूसरी पत्नी उठाए और साथ ही पहली पत्नी का ख्याल रखे। 2011 के जनसंख्या जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, देरासर की आबादी 596 है, जिनमे से 309 पुरुष हैं और 287 महिलाएं।

राजस्थान का देरासर भारत के ऐसे गांवों में से एक है जहां 'बहुविवाह' की प्रथा सालों से चली आ रही है। महाराष्ट्र में भी कई गांव हैं जहां पानी की किल्लत की वजह से पुरुषों को बहुविवाह करना पड़ता है। बहुत से क्षेत्र सूखाग्रस्त होते हैं और पानी के लिए कई-कई गांव पार करने पड़ते हैं जिसमे 10 से 12 घंटे लग जाते है। महाराष्ट्र में ऐसे लगभग 19,000 सूखाग्रस्त गांव हैं।

दूसरी पत्नियों को इन गांव में 'वाटर वाइव्स' (पानी की पत्नियां) या 'वाटर बाईस' (पानी की बाई) कहकर सम्बोधित किया जाता है। एक ऐसा भी गांव है (देंगनमल) जहां पुरुष तीन शादियां तक करते हैं ताकि एक पत्नी बच्चों और घर की देख-रेख करे तो बाकी दो पत्नियां पर्याप्त मात्रा में पानी ढूंढ़ के लाएं। ऐसे गांव में अक्सर देखा जाता है कि दूसरी पत्नियां ज्यादातार पहले पति की छोड़ी हुई या विधवा होती हैं। ये भी देखा जाता है कि उम्रदार पुरुष अपने से कई छोटी उम्र की लड़कियों से शादी करते हैं, क्योकि वो उम्रदार औरतों से ज्यादा पानी ढोने में सक्षम होती हैं। भारत में बहुविवाह, सिवा मुस्लिम धर्म के लिए, सन 1956 में गैरकानूनी करार दिया गया था। परन्तु ये कानून गोवा के हिन्दुओ पे लागु नहीं होता। उन्हें बहुविवाह करने की अनुमति है। 2015 में सुप्रीम कोर्ट ने 1961 की जनगणना (अंतिम जनगणना, जिसमें इस तरह का डाटा एकत्रित किया गया, के तहत) को मद्देनजर रखते हुए कहा था, "भारत में मुस्लिम धर्म (5.78%) से कहीं ज्यादा दूसरे समुदाय के लोग बहुविवाह करते हैं। आदिवासियों में सबसे ज्यादा (15.25%) और बौद्ध (7.9%), हिंदुओं में (5.8%) बहुविवाह किए गए, जो 1960 में मुस्लिम धर्म से ज्यादा थे।"

ऐसे गांवों में कई बार अधिकारी लोग भी बहुबिवाह नहीं रोक पाते। हैरानी की बात यह है कि यहां बहुविवाह पहली या दूसरी पत्नी की मर्जी से ही होते हैं। इस दिशा में सरकार को पानी की उपलब्धता और लोगों के जीवन स्तर में सुधार के लिए कड़े और जरूरी कदम उठाने होंगे। वर्ना एक के बाद एक इस तरह प्रथाएं बनती जाएंगी, जो महिलाओं के विकास और समाज में उनकी स्थिति को बद से बदत्तर कर देंगे।

(एनडीटीवी इंडिया से साभार)

हिंदी लिखने में असावधानी के कारण होने वाली भूलों के संबंध में

लोग अक्सर 'ई' और 'यी' में, 'ए' और 'ये' में और 'एँ' और 'यें' में जाने-अनजाने गड़बड़ करते हैं...।

कहाँ क्या इस्तेमाल होगा, इसका ठीक-ठीक ज्ञान होना चाहिए...।

जिन शब्दों के अन्त में 'ई' आता है वे संज्ञाएँ होती हैं क्रियाएँ नहीं... जैसे- मिठाई, मलाई, सिंचाई, ढिठाई, बुनाई, सिलाई, कढ़ाई, निराई, गुणाई, लुगाई, लगाई-बुझाई...।

इसलिए 'तुमने मुझे पिक्चर दिखाई' में 'दिखाई' ग़लत है... इसकी जगह 'दिखायी' का प्रयोग किया जाना चाहिए...। इसी तरह कई लोग 'नयी' को 'नई' लिखते हैं...। 'नई' ग़लत है , सही शब्द 'नयी' है... मूल शब्द 'नया' है , उससे 'नयी' बनेगा...।

क्या तुमने क्वेश्चन-पेपर से आंसरशीट मिलायी... ?

('मिलाई' ग़लत है...।)

आज उसने मेरी मम्मी से मिलने की इच्छा जतायी...।

('जताई' ग़लत है...।)

उसने बर्थडे-गिफ़्ट के रूप में नयी साड़ी पायी...। ('पाई' ग़लत है...।)

अब आइए 'ए' और 'ये' के प्रयोग पर...।

बच्चों ने प्रतियोगिता के दौरान सुन्दर चित्र बनाये...। ('बनाए' नहीं...।)

लोगों ने नेताओं के सामने अपने-अपने दुखड़े गाये...। ('गाए' नहीं...।)

दीवाली के दिन लखनऊ में लोगों ने अपने-अपने घर सजाये...। ('सजाए' नहीं...।)

तो फिर प्रश्न उठता है कि 'ए' का प्रयोग कहाँ होगा..? 'ए' वहाँ आएगा जहाँ अनुरोध या रिक्वेस्ट की बात होगी...।

अब आप काम देखिए, मैं चलता हूँ...। ('देखिये' नहीं...।)

आप लोग अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी के विषय में सोचिए...। ('सोचिये' नहीं...।)

नवेद! ऐसा विचार मन में न लाइए...। ('लाइये' ग़लत है...।)

अब आख़िर (अन्त) में 'यें' और 'एँ' की बात... यहाँ भी अनुरोध का नियम ही लागू होगा... रिक्वेस्ट की जाएगी तो 'एँ' लगेगा , 'यें' नहीं...।

आप लोग कृपया यहाँ आएँ...। ('आयें' नहीं...।)

जी बताएँ , मैं आपके लिए क्या करूँ ? ('बतायें' नहीं...।)

मम्मी , आप डैडी को समझाएँ...। ('समझायें' नहीं...।)

अन्त में सही-ग़लत का एक लिटमस टेस्ट... एकदम आसान सा... जहाँ आपने 'एँ' या 'ए' लगाया है , वहाँ 'या' लगाकर देखें...। क्या कोई शब्द बनता है ? यदि नहीं , तो आप ग़लत लिख रहे हैं...।

- साइबर नजर